यशपाल के उपन्यासों में नारी एक अध्ययन

डॉ. स्नेहलता निर्मलकर[1] & मंजु कर्ष[2]

[1](सहायक प्राध्यापक), डॉ. सी. वी . रामन वि. कोटा बिलासपुर(छ.ग.)

[2](एम. फिल– हिन्दी), डॉ.सी.वी .रामन वि. कोटा बिलासपुर(छ.ग.)

Received: January 09, 2019 Accepted: February 11, 2019

ABSTRACT: *उपन्यास विधा का सूत्रपात करने कथाकार मुं"ाी प्रेमचन्द की परम्परा में य"ापाल ही केवल एक ऐसे उपन्यासकार के रूप में हमारे सम्मुख प्रस्तुत होते हैं जिन्होने अपने उपान्यासो में य"ापाल का नारी –चेतना को उजागर करने का प्रयास किया है । उपन्यासों में य"ापाल नारी– चेतना संबंधी दृष्टिकोण और भी अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। य"ापाल द्वारा नारी जीवन की विव"ाताओ, चारित्रिक भिन्नताओं और सामाजिक विसंगतियों का जैसा चित्रण हुआ है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। नारी के प्रति भारतीय जन – मानस प्रायः दोहरी मानसिकता का "िाकार रहा है। एक ओर वह–देवी, शक्ति और कन्या के रूप में पूजनीया–वंदनीय रही तो दूसरी ओर अत्यंत पतिता, विना"ा का कारण और अध्यात्म–साधना में बाधक तत्व के रूप में स्थापित की गई।*

Key Words:

(1)प्रस्तावना :–

य"ापाल नारी–चरित्र के प्रति मध्ययुगीन मानसिकता से जन–सामान्य को उबारने में बहुत सफल हुये। य"ापाल ने अपने उपन्यसो में नारी की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के साथ–साथ यौन "ाोषण संबंधी समस्याओं पर गहराई के साथ विचार किया। उन्होने यौन समस्याओं को लेकर सामाजिक, नैतिक मूल्यों को नये संदर्भो में चित्रित किया है। नारी मात्र भोग्या और आश्रिता ही नही है अपितु वह पुरूष के समान ही हमारी सामाजिक संरचना में एक अत्यंत क्रिया"ाील एवं महत्वपूर्ण अंग के रूप में सहभागिनी है। य"ापाल ने अपने उपन्यासो में जहाँ अपने नारी पात्रो द्वारा यौन संबंधो को प्रमुख रूप से उभारा है वही आर्थिक, सामाजिक रूप से पिछड़ी नारियों की समस्याओ को यथार्थ क धरातल पर चित्रित किया है। य"ापाल के नारी पात्र आर्थिक संघर्ष झेलते है, यौन शोषण के "िाकार है, धार्मिक, अंधवि"वासों में जकडे है, रूढिगत मान्यताओं कोढोते है फिर भी उनमें एक छटपटाहट है, इन सभी संकटो से उभरने की । अपने स्तर से इनके विरूद्ध लड़ने की। वे पराजित होते है तो विव"ाता के हाथो, सामाजिक परिस्थितियों के विपरीत होने के कारण। परन्तु, वे अपने अस्तित्व के प्रति सचेत है। अस्तित्व के प्रति इसी चेतना का प्रद"ान य"ापाल क उपन्यासो की वि"ोषता रही है तथा यही उद्दे"य भी रहा है। य"ापाल ने प्रायः मध्यवर्गीय नारी–चरित्र को प्रमुखता दी। नारी पात्रो के चित्रण मे उन्होने नारीत्व के सम्मान की रक्षा की और आर्थिक, सामाजिक स्तर पर उसके संघर्ष को वैज्ञानिक तर्कपूर्ण आधार पर दि"ाा देने का प्रयत्न किया।

(2)यशपाल के व्यक्तित्व एवं कतित्वः–

य"ापाल का जन्म 3 दिसम्बर 1903 ई फिरोजपुर छावनी में हुआ था। हिन्दी के य"ास्वी कथाकार और निबन्ध लेखक है। य"ापाल राजनीतिक तथा साहित्य दोनो साधन है और एक ही लक्ष्य की पूर्ति में सहायक है। इनके पूर्वज कांगड़ा जिले के निवासी थे और इनके पिता हीरालाल को विरासत के रूप में दो–चार सौ गज जमीन तथा एक कच्चे मकान के अतिरिक्त और कुछ नही प्राप्त हुआ था। इनकी माँ प्रेमदेवी उन्हे आर्य समाज का तेजस्वी प्रचारक बनाने क दृष्टि से "िाक्षार्थ गुरूकुल कांगड़ी भेज दिया । गुरूकुल की राष्ट्रीय वातावरण में बालक य"ापाल के मन में विदे"ाी शासन के प्रति विरोध की भावना भर गयी।

- **कान्तिकारी आन्दोलन** :–लाहौर के ने"ानल कॉलेज में भर्ती हो जाने पर इनका परिचय भगत सिंह और सुखदेव से हो गया। वे भी क्रान्तिकारी आन्दोलन की ओर आकृष्ट हुये। सन् 1921 ई. के बाद तो ये स"ास्त्र क्रान्ति के आन्दोलन में सकिय भाग लेन लगे। सन् 1929ई. में वाइसराय की गाड़ी की नीचे बम रखने के लिये घटनास्थल उन्हे भी जाना पड़ा, बाद में कुछ गलतफहमी के कारण वे अपने दल में ही गाली के "िाकार होते होते बचे।
- **जेल यात्रा** :– चन्द्र"ोखर आजादके शहीद हो जाने पर वे हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र के कमाण्डर नियुक्त हुयें। इसी समय दिल्ली और लाहौर में दिल्ली तथा लाहौर 'ाड़यंत्र के मुकदमें में थे। य"ापाल इन मुकदमों के प्रदान अभियक्तो में थे। पर ये फरार थे और पुलिस के हाथ में नही आ पाये। 1932 ई. में पुलिस से मठभेड़ हो जाने पर गोलिया का भरपूर आदान –प्रदान करने के अनन्तर ये गिरफ्तार हो गये। उन्हे चौदह वर्ष की सख्त सजा हुई। सन् 1938 ई में उ.प्र. में बन्दियों के साथ इनको भी मुक्त कर दिया गया।
- **जेल में लिखी रचनाएँ**:–जेल से मुक्त होने पर इन्होने '' विपल्व'' मासिक निकाला, जो थोड़े ही दिनो में काफी लोकप्रिय हो गया। 1941 ई में इनके गिरफ्तार हो जाने पर 'पिपल्व' बन्द हो गया किन्तु अपनी विचारधारा के प्रचार में इन्होने विपल्व का भरपूर प्रयोग किया। विभिन्न जिलो मे उन्हें पढने–लिखने का जो अवका"ा मिला था

उसमें उन्होने दे"ा– विदे"ा के बहुत से लेखको का मनोयोगपूर्ण अध्ययन किया। ''पिजरे की उड़ान'' और वो दुनियाँ की कहानियॉ प्राय: जेल में ही लिखी गयी । **यशपाल की कृतियॉ**:–य"ापाल जी एक सफल कृतित्व के धनि थे । कहानी ,उपन्यास , निबन्ध, सस्मरण , अन्य संग्रह है।

- **कहानी संग्रह**
  - ज्ञानदान 1944 ई.
  - अभि"ाप्त 1944 ई.
  - तर्क का तूफान 1943 ई.
  - भस्माकृत चिनगारी 1946 ई.
  - वा दुनिया 1941 ई.
  - फूलों का कुर्ता 1949 ई.
  - धर्मयुद्ध 1950 ई.
  - उत्तराधिकारी 1951 ई.
  - चित्र का शीर्षक 1952 ई
- **उपन्यास संग्रह**
  - दादा कामरेड 1941 ई.
  - दे"ाद्रोही 1943 ई.
  - दिव्या 1945 ई.
  - पार्टी कामरेड 1947 ई.
  - मनुष्य के रूप 1949 ई.
  - अमिता 1956 ई.
  - झुठा सच 1958–1959 ई.
  - अप्सरा का श्राव 1965 ई.
  - मेरी तेरी उसकी बात 1974 ई.
- **निबन्ध संग्रह**
  - न्याय का संघर्ष 1940 ई.
  - चक्कर क्लब 1942 ई.
  - बात–बात मे बात 1950 ई.
  - देखा, सोचा, समझा 1951 ई.
- **संस्मरण और अन्य संग्रह**
  - पहला भाग सन् 1951 ई.
  - दूसरा भाग सन् 1952 ई.
  - तीसरा भाग सन् 1955 ई.
  - गाँधीवाद की शव –परीक्षा 1941 ई.

(3) यशपाल क उपन्यासो में नारी :–

य"ापाल क उपन्यास –साहित्य में, भारतीय जन–जीवन की समस्याओं का चित्रण विस्तुत रूप से हुआ है। वे स"ास्त्र क्रांति के राजनीतिक आन्दोलन की उपज थे। राजनीतिक क्षेत्र में उन्होने चन्द्र"ाखर आज़ाद भगत सिंह, सुखदेव आदि की क्रांतिकारी विचारधार के साथ प्रवे"ा किया था। चूँकि वे एक क्रांतिकारी लेखक थे, इसलिए उनके साहित्य में इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। राजनीतिक विचारों के साथ –साथ स्त्री–विम"र् भी उनके उपन्यासो का मुख्य विषय रहा है। य"ापाल के क्रांतिकारी उपन्यासों में हमें नारी की विभिन्न छवियाँ मिलता है।

(1)दादा कामरेड :–

य"ापाल का सर्वप्रथम क्रांतिकारी उपन्यास 'दादा कामरेड' है। यह सन् 1941 ई. में प्रका"ात हुआ। जिसमें उन्होने एक ओर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के क्रांतिकारी पक्ष का दिग्द"ान पाठकों के सम्मुख किया है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक क्रांति का भी। 'दादा कामरेड' में स्त्री–पुरूष समानाधिकार को भी पूरी ताकत के साथ मुखरित किया है। इसमें लेखक ने प्रेम और क्रांति दोनो का संगम पाठको के सम्मुख प्रस्तुत किया है। ''यह उपन्यास लेखक की पहली रचना है, जिसमें हिन्दी में उपन्यास में रोमांस और राजनीति के मिश्रण का प्रारम्भ किया।'' परन्तु डॉ. रामदर"ा मिश्र इस मत से

सहमत नही है। उनके अनुसार – ''जो लोग दादा कामरेड मे राजनीति और रोमांस का समन्वय देखते है, उन्हे यह जानना चाहिए कि यह समन्वय नही है यह एक मूल विस्तार है। राजनीतिक कथा को मनोहर बनाने के लिए रोमांस की अवधारणा नही की गई है, वरन् क्रांति की व्यापक दृष्टि से नारी की समस्या को मूल सामाजिक समस्या के अन्तर्गत ही देखा गया है। यह आत्मिक नही है कि सभी माननीय और प्रगति"ािल दृष्टिकोण वाले लेखकों ने नारी की समस्या को बहुत सहानुभूति से उठाया है। नारियाँ शोषण के दोहरे पाट में पिसती रही है। शोषक वर्गो के घरो की नारियाँ शोषित है और शोषितों के यहाँ भी नारियाँ शोषित है। इसलिए नारी की समस्या प्रगति"ाील मानवीय दृष्टि के लिए एक बहुत बड़ी समस्या है और सामाजिक समस्या का अपरिहार्य अंग है। बीसवीं शताब्दी नारी– जाति की प्रगति का विकास काल था। इसमें नारी के जीवन मे वि"ोष परिवर्तन दिखाई दिये। य"ापाल के क्रांतिकारी उपन्यासो में जो नारी–पात्र है, उनकी पीड़ा अनन्त है लेकिन वे अत्याचार अन्याय, शोषण, उत्पीड़न दुर्व्यवहार के सामने झुकती, टूटती नही है, वरन् पूरी ताकत के साथ उसका मुकाबला करती है। ऐसा ही एक चरित्र 'दादा कामरेड' उपन्यास की नायिका शैल का है। वह हमारे सम्मुख अनेक छवियों के रूप में आती है। जैसे :–

(1) प्राचीन मान्यताओं को तोड़ती नारी
(2) यौन–संबंधो के प्रति स्वच्छन्द दृष्टि रखने वाली नारी
(3) मध्यवर्गीय नारी और राजनीति

(2) देशद्रोहीः–

दे"ाद्रोही सन् 1943 में प्रका"ात य"ापाल जी का दूसरा महत्वपूर्ण राजनीतिक उपन्यास है। य"ापाल ने इस उपन्यास में सन् 1939 से 1942 तक के भारतीय राजनीतिक और सामाजिक संघर्षो का सूक्ष्म वर्णन किया है। प्रेमचन्द्र के बाद य"ापाल जी ऐसे पहले रचनाकार थे जिन्होने दे"ा की राजनीतिक– सामाजिक सामाजिक समस्याओ पर गहराई से विचार किया 'दे"ाद्रोही' कथानक का फलक 'दादा कामरेड' की अपेक्षा अधिक विस्तृत है, इसका मूल कारण यह है कि इस उपन्यास में उन्होने राष्ट्रीय राजनीतिक सन्दभो के साथ–साथ तद्‌युगोन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृ"य को भी चित्रित किया है। उन्होने इस उपन्यास में तत्कालीन परिस्थितियों को प्रस्तुत करते हुए नारी–जीवन के विभिन्न पहलुआ और छवियों को भी सामने रखा है। जैसे :–

(1) भारतीय रूढ़िवादी परिवार और नारी
(2) विधवा–विवाह का समर्थन
(3) समाज और नारी
(4) दाम्पत्य–जीवन की विषमता स्त्री–पुरूष संबंध
(5) नारी की अस्मिता और मुक्ति के प्रयत्न

(3) पार्टी कामरेडः–

य"ापाल का उपन्यास 'पार्टी कामरेड' एक लघु उपन्यास है। इसका प्रका"ान सन् 1947 में हुआ। यह एक राजनीति उपन्यास है। जिसका कथानक सन् 1945 के आस–पास की परिस्थितियों पर आधारित है। यह उपन्यास य"ापाल के क्रांतिकारी जीवन की कहानी है। जैसे कि डॉ. सरोज बजाज के कथन से स्पष्ट होता है– '' पार्टी कामरेड य"ापाल के स्वयं के अनुभव जीवन के कटु सत्य तथा परे"ाानियों को अनुभव किया वही सब कुछ पार्टी कामरेड की कथावस्तु है।'' 'पार्टी कामरेड' मूलतः एक क्रांतिकारी उपन्यास है, इसलिए इसमें नारी–मुक्ति के सवाल प्रायः कम ही मिलते है। लेकिन है, वह नारी मुक्ति के सन्दर्भ में आज भी प्रासंगिक है। जैसेः–

(1) राष्ट्रीय–मुक्ति में नारी का योगदान

(4)मनुष्य के रूप :–

य"ापाल जी का सन् 1949 में प्रका"ात 'मनुष्य के रूप' एक सामाजिक, राजनीतिक उपन्यास है। यह तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि को लेकर लिखा गया है। इसमें लेखक ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि आखिर मनुष्य क्या है? उसके कितने रूप और रंग है? और सामाजिक परिस्थितियों का उसके व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ता है? परिस्थितियों के घात–प्रतिघात के कारण मनुष्य का रूप परिवर्तित होता है। यह परिवर्तन इतना अधिक होता है कि सहजता से पहचानने मे नही आता । श्रीनिवास शर्मा जी के मतानुसार– ''मनुष्य का स्वभाव, चारित्र रूप ,गुण, आचार–व्यवहार सभी परिस्थितियों के अनुसार बदल जाते है। आलोच्य उपन्यास में य"ापाल ने परम्परा परिस्थिति, परिवे"ा सामाजिक मान्याताओ के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य के बनते–बिगड़ते रूपो का मार्मिक तथा मोहक छवि अंकन किया है।'' जैसे :–

(1) नारी का क्रय–विक्रय
(2) पारिवारिक अत्याचार सहती विधवा नारी
(3) आश्रय को तला"ाती नारी
(4) आर्थिक पराधीनता और नारी का शोषित रूप
(5)सामाजिक परिस्थिति और नारी
(6) आधुनिक विचारो में आस्था रखने वाली नारी
(7) प्रेम और नारी
(8) विवाह और नारी

(5) झूठा सच :–

य"ापाल का झूठा –सच उपन्यास दे"ा–विभाजन की त्रासदी का दस्तावेज है। दंगो की विभीषिका से मानवीय जीवन में क्या उथल–पुथल हुई या मानव–जीवन किस हद तक प्रभावित हुआ इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। यह उपन्यास दो भागो में प्रका"ात हुआ।
पहला भाग–झूठ सच–वतन और दे"ा (1958) और
दूसरा भाग–झूठ सच– दे"ा का भविष्य (1960) नाम से है।
झूठ–सच उपन्यास सामाजिक –राजनीतिक पृष्ठभूमि को लेकर लिखा गया है, लेकिन इसमे राजनीतिक पक्ष कर जितना सजीव चित्रण हुआ है, उतना ही सामाजिक पक्ष का भी । य"ापाल ने 'झूठ सच' उपन्यास में नारी की विभिन्न छवियों को तत्कालीन सामाजिक समस्याओ तथा नारी–मुक्ति के सवालो के सन्दर्भ में पूरी "िाद्दत के साथ समाज के समक्ष रखा है जैसेः–
(1) परंपरागत सामाजिक व्यवस्था और नारी का स्थान
(2) परंपरागत विवाह संस्था और नारी
(3) आर्थिक पराधीनता और नारी
(4) साम्प्रदायिकता और नारी
(5) नारी के प्रति धर्म का स्वरूप
(6) विवाह–विच्छेद का अधिकार और स्त्री

(6) मेरी तेरी उसकी बात :–

यशपाल का उपन्यास 'मेरी तेरी उसकी बात' सन् 1974 में प्रकाशित एक और महाकाव्यात्मक प्रयास है। इस उपन्यास में लेखक ने बदली हुई राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थितियों को जन– साधारण के समक्ष प्रस्तुत किया है। मधुरेश जी के शब्दों में 'मेरी तेरी उसकी बात' यशपाल का एक ऐसा ही उपन्यास है जो एक विशेष कालखण्ड के परिप्रेक्ष्य में यदि एक ओर व्यापक जन–चेतना को अंकित करने की कोशिश करता है तो दूसरी ओर सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन की स्थितियों का आंकलन करना चाहता है। वे स्त्री – अस्मिता के प्रश्नो को सम्पूर्ण ऊर्जा के साथ उठाते है और नारी समस्या के सभी बिन्दुओं का समाधान भी पाठको के सम्मुख प्रस्तुत करते है।
(1) परंपरागत ढ़ाँचे को तोड़ती नारी
(2) अंतर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन
(3) दाम्पत्य जीवन और की अस्मिता का सवाल
(4) सामाजिक–पारिवारिक रूढ़ियों को तोड़ती विधवा नारी
(5) राजनीति और नारी
(6) स्वतंत्र यौन संबंध और नारी
(7) मातृत और नारी

(7) दिव्या :–

यशपाल का उपन्यास दिव्या (1945) हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इन्होने दिव्या को ऐतिहासिक उपन्यास ही नही वरन् इतिहास पर आश्रित माना है। वे अपने उद्देश को स्पष्ट करते हुए कहते है कि – 'दिव्या' इतिहास नही, ऐतिहासिक कल्पना मात्र है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर व्यक्ति और समाज की प्रवृति और गति का चित्र है। लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयत्न किया है। इसमें इन्होने नारी जीवन की विभिन्न छवियों और उसकी जिजजीविषा के प्रश्ना को पूरी सम्पूर्णता के साथ उठाया है। जैसेः–
(1) दास –प्रथा और नारी
(2) बहु–पत्नी प्रथा और नारी
(3) नारीत्व का अभिशाप
(4) बौद्ध धर्म और नारी
(5) नारी के स्वातंत्र्य का प्रश्न

(8) अमिता :–

यशपाल का दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास 'अमिता' है। सन् 1956 में प्रकाशित इस उपन्यास में उन्होने मौर्य सम्राट की कलिंग विजय की कथा को आधार बनाया है। दिव्या की ही भाँति 'अमिता' की सृष्ठि भी यशपाल ने कल्पना के सहयोग से इतिहास की पृष्ठभूमि पर निर्मित की है। स्वंय यशपाल इसके प्राक्कथन में लिखते है– 'दिव्या' के कथानक की भाँति अमिता की कहनी भी इतिहास नही ऐतिहासिक कल्पना है। इतिहास की प्रामाणिक घटना केवल अशोक का कलिंग विजय के लिये आक्रमण और उस युद्ध के परिणाम में अशोक का भविष्य में कुछ न करने की प्रतिज्ञा कर लेना ही है। यद्यपि 'अमिता' उपन्यास का ताना–बाना विश्व युद्ध और शांति को लेकर बुना गया है, लेकिन यशपाल ने इस उपन्यास में नारी–मुक्ति संबंधी जिन समस्याओ के उठाया है वह विचारिणीय है। जैसेः–
(1) दास–दासियों की सामाजिक स्थिति
(2) शोषण विहीन समाज और नारी

(3) धर्म और नारी

(9) अप्सरा का श्राप :—

यशपाल का 'अप्सरा का श्राप' उपन्यास सन् 1965 ई. में प्रकाशित हुआ था। उसकी कहानी उपन्यास रूप में प्रकाशित होने से पूर्व सन् 1964 में 'माया' पत्रिका में क्रमशः प्रकाशित हो चुकी थी। यह उपन्यास उसी कहानी का संशोधित रूप है। इसमें यशपाल ने राजा दुंष्यत और शकुन्तला की पौराणिक कथा को आधार बनाया है। 'अप्सरा का श्राप' उपन्यास का मूल—स्त्रोत महाभारत है। इसकी गाथा पौराणिक होते हुए भी यशपाल ने इसमें नवीनता का पुट दिया है। इन्होने पतिव्रत धर्म के आर्दश को जो, शकुन्तला — दुष्यंत की कथा से संबंधित है, आधुनिक दृष्टि से देखने का प्रयास किया। अप्सरा के श्राप में यशपाल ने शकुन्तला और मेनका के माध्यम से सामन्ती समाज में नारी की अस्मिता और जिजीविषा के जिन उदात्त पक्ष को उठाया है, वह इस प्रकार हैः—

(1) पतिव्रता नारी और धर्म

(2) नारी के अपमान और अवसाद की सर्वकालिक स्थिति

(3) नारी और आत्माभिमान

(4) आधुनिक मानवीय दृष्टिकोण और नारी

निष्कर्षः—

उपन्यास में यशपाल का दृष्टिकोण और भी अधिक अच्छी तरह उभर सका है। उनका पहला उपन्यास ''दादा कामरेड'' क्रान्तिकारी जीवन का चित्रण करते हुये नारीयों की स्थिति तथा मजदुरो के संघठन को राष्ट्रोद्वार का अधिक संगत उपाय बतलाया है। देश द्रोही कला की दृष्टि से 'दादा कामरेड' से कई कदम आगे है। ''दिव्या'' यशपाल के श्रेष्ठ उपन्यासो में एक है। इस उपन्यास में युग—युग की उस दलित — पीड़ित नारी की करूण कथा है जो अनेकानेक संघर्षो से गुजरती हुई अपना स्वस्थ मार्ग पहचान लेती है। ''मनुष्य क बदलते हुये रूपो को प्रभावशाली ढ़ंग से चित्रित किया गया है। ''अमिता'' उपन्यास ''दिव्या'' की भांति एतिहासिक है। इस तरह यशपाल जी अपने सभी उपन्यासो में नारीयों की विभिन्न स्थितियों को लिखा है। यशपाल जी का सन् 26 दिसंबर 1976 ई. में निधन हो गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ :—

1. अग्रवाल चन्द्रमोहन (1994), भारतीय नारी विविध आयाम, भाग 2 श्री अल्माड़ा बुक डिपोर (उ.प्र.)।
2. अग्रवाल बिन्दु (1968), हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण राधाकृष्णन प्रकाशन ,दिल्ली।
3. चमन लाल (1985),यशपाल के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना प्रकाशन ,नई दिल्ली।
4. गुप्त सरोज (1970) यशपाल व्यक्तित्व और अनुराग प्रकाशन अजमेर।
5. मलहोत्रा सुदर्शन (1970) यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन, आर्दश साहित्य प्रकाशन दिल्ली।
6. शर्मा गोपालकृष्ण (2004) यशपाल का उपन्यास साहित्य, नवचेतन प्रकाशन दिल्ली।